लोकदेवता देवनारायण गौ, भेड़-बकरी सहित पशुधन की रक्षा और विकास के लिए सन्नद्ध समुदाय के आराध्य हैं। उनका दौर भारतीय समाज की परंपरागत संरचना में नई-नई जातियों के विकास, रूपांतरण और आपसदारी का दौर था। उनसे जुड़ी गाथाएं पशुपालक जातियों के विकास और भील जैसे जनजातीय समुदाय के साथ उनकी अंतर्क्रिया को साक्षात् करती हैं।

प्रमुख लोकपूज्य देवों में गोगाजी की प्रसिद्धि राजस्थान-मालवा क्षेत्र सहित देश के अनेक भागों में है। इन्हें गौ-रक्षक जाहरवीर गोगाजी के नाम से भी जाना जाता है। विक्रम संवत् 1003 में गोगाजाहरवीर का जन्म राजस्थान के ददरेवा (चूरू) चौहान वंश के राजपूत शासक जैबर (जेवरसिंह)की पत्नी बाछल के गर्भ से गुरु गोरखनाथ के वरदान से भादों सुदी नवमी को हुआ था। जिस समय गोगाजी का जन्म हुआ, उसी समय एक पंडित के घर नाहर सिंह वीर का जन्म हुआ। ठीक उसी समय दो आम ग्रामवासियों के यहां भज्जू कोतवाल और रत्ना वीर जी का जन्म हुआ। ये सभी गुरु गोरखनाथ जी के शिष्य हुए। उन्होंने अनेक आक्रांताओं को परास्त किया। गोगाजी ने आक्रांताओं से युद्ध कर कत्लखानों में ले जाई जा रही हजारों गौओं की रक्षा की। राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले का नगर गोगामेड़ी में भाद्र शुक्लपक्ष की नवमी को गोगाजी देवता का मेला भरता है। उन्हें हिन्दू और मुस्लिम दोनों समान रूप में पूजते हैं। वीर गोगाजी गुरु गोरखनाथ के परम शिष्य थे। मन्त्र शक्ति से गोगादेव सर्पदंश से पीड़ित व्यक्ति को स्वस्थ कर देते थे। लोक में उनके मन्त्र इतने सिद्ध माने जाते हैं कि स्वयं सर्प आकर अपना जहर वापस ग्रहण कर लेता था। लोक मान्यता है कि आज भी यदि सर्प दंश से पीड़ित व्यक्ति को गोगाजी की मेड़ी तक लाया जाये तो वह व्यक्ति सर्प विष से मुक्त हो जाता है। देश के अनेक भागों में गोगाजी पर केंद्रित कथा, गाथा, गीत आदि की समृद्ध परम्परा मिलती है।

गोगाजी के प्रतीक के रूप में पत्थर या लकडी पर सर्प प्रतिमा उत्कीर्ण की जाती है। उत्तर एवं पश्चिम भारत में इन्हें बहुत बड़े लोक समुदाय द्वारा जाहर पीर या गोगा पीर कहा जाता है। जाहरवीर गोगा की छड़ी का बहुत महत्त्व होता है और जो साधक छड़ी की साधना नहीं करता, उसकी साधना अधूरी ही मानी जाती है। लोक मान्यता के अनुसार जाहरवीर जी के वीर छड़ी में निवास करते हैं। सिद्ध छड़ी पर नाहरसिंह वीर, सावल सिंह वीर आदि अनेकों वीरों का पहरा रहता है। छड़ी लोहे की सांकलें होती हैं, जिन पर एक मुठा लगा होता है। छड़ी अक्सर घर में ही रखी जाती है और उसकी पूजा की जाती है। केवल सावन और भाद्र

वीर तेजाजी

महीने में छड़ी की शोभा यात्रा लोक समुदाय द्वारा धूमधाम से निकाली जाती है और छड़ी की नगर में फेरी लगवाई जाती है। ऐसा माना जाता है कि अर्जन ओर सर्जन नामक अपने दो भाइयों को मुगलों के साथ मिल जाने पर जब गोगादेव ने उन्हें मार गिराया तो उनकी माता ने उन्हें घर में आने से रोक दिया, तब वे नगर के ही एक स्वच्छक के घर जाते हैं, जहां उनको ससम्मान जलपान कराया जाता है, जिससे खुश होकर गोगादेव ने अपना एक निशान उस समुदाय को दे देते हैं। तब से आज तक यह समुदाय बड़े धूमधाम से इस निशान को छड़ी के रूप में निकालते हैं और पूजा-अर्चन करते हैं। इससे नगर में आने वाले सभी संकट शांत हो जाते हैं। जाहरवीर के भक्त दाहिने कन्धे पर छड़ी रखकर फेरी लगवाते हैं। छड़ी को अक्सर लाल अथवा भगवे रंग के वस्त्र पर रखा जाता है।

राजस्थान के पांचों पीरों में पाबूजी का महत्वपूर्ण स्थान है। उनका जन्म विक्रम की चौदहवीं शताब्दी के प्रारंभिक दशकों में माना जाता है। वे राव आस्थान के पौत्र व धांधल के पुत्र थे। आस्थान के बड़े पुत्र धूह... थे। राव आस्थान अपने पिता राव सीहा के देहावसान (बीठू ग्राम, वि.सं. 1330, कार्तिक कृष्णा द्वादशी सोमवार, ईस्वी 1273, 9 अक्टूबर) पर उनके